

①

॥ श्री-॥ २ ॥

॥ श्रीरामविजयद्वितीयः श्रीराम ॥



(2)

॥१॥

॥ श्री माहा गणाधिपतये नमः ॥ श्री सरस्वत्ये नमः ॥ श्री राम चंद्राय नमः ॥ श्री सोम सदा शि
वाय नमः ॥ जै सें मानस सरोवर वेष्टित ॥ मराकदिस तिशो भिवंत ॥ तै सें श्रवणि बे
सेल संत ॥ लोचन बनंत जया शि ॥ १ ॥ श्रवणि बे सता संत सज्जन ॥ वाचे शि पारणे
हाय पूर्ण ॥ जै साइंदु विले कुन ॥ सारिता नाथ उचं वळें ॥ २ ॥ किं वर्षाव का किंगेशि
पुर ॥ किं घन गर्जता नाचति मयोर ॥ किं वसंत देखे नि सुंदर ॥ को किं का गर्जें जानें
दें ॥ ३ ॥ किं विदेखतां कमळें विकाशति ॥ किं दाता देखतां याच करुषति ॥ तै शा देखे
नि संत मुर्ति ॥ वादे विशि जानें द ॥ ४ ॥ जै शिंदें द्रापुठर भा ॥ दावि नृत्य कै तुक शोभा ॥ १ ॥
तै शि देखतां संत सभा ॥ वादे विशि जानें द ॥ ५ ॥ कै से द्यावे दिष्टांत ॥ ते मिने येचिनि
श्रित ॥ परि माझे अन्याय समस्त ॥ संति पोटांत द्या लावे ॥ ६ ॥ शिवें कंठ धारें लह

(2A)

काहव॥ किं सागरापोटिवडवानक॥ किं श्रुतिनाभारसकक॥ पाताळकुर्मैध
रियेला॥७॥ सकळप्रकाशकज्ञेसाशशि॥ पारदितियेशिलाकवाहातिदशि॥ किं
हिमनगजामाताशि॥ धतुरपुष्पसमर्पिते॥८॥ तैसेचिहेशब्दनिश्चित॥ सज्ज
नहृदंईधरितिसय॥ असोप्रथमध्याईरातकथार्थ॥ उध्धरिलावाल्मीकना
रहे॥९॥ श्रीरामकथेचाभारंभयेथुनि॥ जविंमुळिसंकिर्णछुछुवेणि॥ परिपु
देविशाळसमुद्रगामिनि॥ जाणिजेसज्जनिवृथातेशि॥१०॥ कमळोद्भवापासुनि
निश्चिति॥ पुत्रजालाजोनामपौवस्ति॥ परमतपुत्रिजेसागभस्तो॥ बाहिबेदजासिमुखोदत॥११॥
तणविंदुकेंन्यादेववर्णि॥ तेषौलस्तिचिजाणिजेग्रहणि॥ विश्वश्रवात्यापासोनि॥ पु
त्रजालाविरन्यात॥१२॥ भारद्वाजकेंन्यामाहामति॥ तेदिधलिंविश्वश्रव्याप्रति॥

त्याचे पोटी निश्चित कुबेर पुत्र जन्मला ॥१३॥ विश्वश्रव्यापासुनी जन्मपुष्पण ॥ ह्मणे नि
 नाम वैश्रवण ॥ लेणे लप करुनि दारण ॥ चतुरानन वस्य केला ॥१४॥ कमळासने तुल्य
 न ॥ पौत्रपुत्र ह्मणे न ॥ लंकापुष्पक देउन ॥ सागरोदरि रूपापिला ॥१५॥ पुर्वि विधिने लं
 कानिर्मिलि ॥ ते दानविंबकें चिद्येतलि ॥ मायुति निर्जरि सोडविलि ॥ मग दिष्टि कुबे
 राले ॥१६॥ तों पाताळि चांदे लसुभावि ॥ विद्वेष्टे हिंडं मुमंडळि ॥ लंका देखोनि ते वैकि ॥
 मनामाझि आवेशला ॥१७॥ ह्मणे हं लंकाचा मुचि निश्चीत ॥ हा कोण येथें राज करिव ॥
 समाचार येता जाले अत ॥ सर्वहतांत तयाचा ॥१८॥ कुबेर देखोनि सुंदर ॥ दैत्य करि ॥२॥
 मग विचार ॥ याचिया पित्या शिसाचार ॥ कन्या देउनि जा मुचि ॥१९॥ लिपा सावह
 इत सुत ॥ या शिसा ह्ये हां सर्व दैत्य ॥ हं लंका राज्य समस्त ॥ हिरोनि घेउं क्षणार्ध ॥२॥

जैसे सुमाळि दुर्जन ॥ विप्रवेश अवलंबुन ॥ लटि किंच शक्ति धरुनि ॥ आला जाण
 दुरात्मा ॥ २१ ॥ जैसे नटाचावेश जाण ॥ किंविषाचें शितकपण ॥ किंसवचोरोसें गों
 उवचन ॥ परप्राणहारणार्थ ॥ २२ ॥ किं गोरयाचें गायन ॥ किंदेसेंबकाचि शंतिग
 हन ॥ किंवैशोचें मुखमंडण ॥ कामिकमणें नहारणार्थ ॥ २३ ॥ किं साधुवेश धरुनि
 बुध्द ॥ यात्रें शिजाले जैसें मैद ॥ किं वाडटपाडे निरांजनि शुध्द ॥ होउनियां वैसले ॥ २४ ॥
 किं वारिवार सुंदर वंदावन ॥ किंदामिवाचें मुष्कभजन ॥ किंधन लुब्धाचे तलजान ॥
 परधनहारणार्थ ॥ २५ ॥ असो जैसे सुमाळि पापराशि ॥ लेणें आपुलिकें न्याकें कै
 कैशि ॥ येउनि आला विश्वश्रव्यापाशि ॥ प्रार्थुनि त्याशि दिधलि ॥ २६ ॥ ह्मणे मित्र
 किंचन ब्राह्मण ॥ येवढें ध्याजि कें न्यादान ॥ ऋषिनें कायत्येनेणें न ॥ लाविलें ल

(८)

॥३॥

मलियेशिं ॥२७॥ दैत्यगेला स्वस्थानाशि ॥ मगयेकदिवशिंतेपत्तिशि ॥ सुर्यजातां
अस्ताचकाशि ॥ भोगमागतिजालियें ॥२८॥ जेंसंध्याकाळि होतगर्भिणि ॥ तरिमा
हातामशि जन्मेप्राणि ॥ तोहोमकावसाधुनि ॥ भोगदेई नहणतसे ॥२९॥ स्वस्त्रि
शिभोगनेदिजशि ॥ तरिबाळहत्याहोतत्याचिशिरिं ॥ परिहोमव्यावयादुराचारि ॥
जाउंनदि ऋषितें ॥३०॥ परमक्षोभोनिमाह ऋषि ॥ अंगसंगकेलातियेशि ॥ हणेतु
विप्रकंन्यानकेशि ॥ माहातामसेपापसये ॥३१॥ ब्रह्मराक्षसतुझेउरिं ॥ पुत्रहोईत
दुराचारि ॥ यरिपतिचेचरणधरि ॥ येकसुपुत्रदेईजे ॥३२॥ रावणबाणिकुंभकर्ण
तिसराभक्तराजविभिषण ॥ जोपित्रुवरदेकरन ॥ साधुपुर्णजन्मला ॥३३॥ कुंभ
कर्णजेकाजन्मला ॥ मुखपसरोनिटाहोफेडिला ॥ तेणभुगेळधरारिला ॥ प्रकथ

॥३॥

गमला जिवांशि ॥ ३४ ॥ लटिकासुर्पनखाभगिनिजाण ॥ परित्योततोरनविमि
 षण ॥ जैसेकागविष्टतनश्चथनिर्माया ॥ केवळस्थानविष्णुचै ॥ ३५ ॥ किंवायसांत
 कोक्किळाकेवळ ॥ किंशिंपिमाजिमुक्ताफळ ॥ किंदैत्यकुकिभजनशिक ॥ प्रह्ला
 दपुर्विजन्मला ॥ ३६ ॥ यावारिगेकर्णलिरिजाउन ॥ तिथेकरेतिबनुष्टन ॥ रावणे
 आराधिलाअपणारमण ॥ कुंभकर्णेकमलाइव ॥ ३७ ॥ श्रीविष्णुचैआराधन ॥ करे
 ताजालाविमिषण ॥ ब्रह्मायेउनिवरदान ॥ देताजालातिघाते ॥ ३८ ॥ रावणमागे
 वरदान ॥ इंद्रादिदेवकाद्रव्यगण ॥ यांशिबदिशाकेरक्षिन ॥ सर्वशिमान्यआज्ञा
 माशि ॥ ३९ ॥ संपत्तिसंततिविद्याधन ॥ कावेंसकळकळाप्रविण ॥ याउपरिकुंभक
 र्ण ॥ वरमागेआपेक्षित ॥ ४० ॥ तौदेवजालेउदिन ॥ कायमागेलकुंभकर्ण ॥ किंदेच

5

॥४॥

राचरभक्षिन॥हेवरदानमागेल॥४१॥किंगिबिनह्मणेलभुगोक॥किंदाटेशिघालिठ
क्रुपिमंडक॥मगसरस्वतिसदेवसकक॥प्रार्थित जाले तेथवां॥४२॥तुंजिक्का
ग्रिवसशिंदवि॥तरियादुष्टाशि॥त्रांतियालावि॥लोकिंसुखिराहिजेसर्वि॥बै
सेवदविंसरस्वतिये॥४३॥कुंभकर्णभायिचराक्षस॥सरस्वति॥त्रांतियालिविशे
षा॥तोंविधिह्मणेघटश्रोत्रास॥भायेसिसमागकांहि॥४४॥मगबोलेकुंभकर्ण॥
मजनिद्रादेईसंपुर्ण॥अखंडकरिनामयन॥चतुराननबवस्यह्मणे॥४५॥ता ॥४॥
त्काकनिद्राकरियेउ।न॥पउलाहैसागणहिना॥भुभुसिमाडिसर्वज्ञान॥बु
डेनिगेलेंतयाचें॥४६॥मंद्राचकबाउवापडिला॥किंमाहादृष्टउन्मळिला॥नि
द्राभेरंधोरुंलागला॥दिशातेणेदुमदुमिति॥४७॥हैसेहस्तिश्वापदेकाननि॥

५४
 श्वासासरि सैत्रवेशति प्राणि ॥ श्वासटाकि तां धरणि ॥ वरिपडत आरडत ॥ ४८ ॥
 निद्रादेह चिस मधि जाण ॥ निद्राजिवाचे आवरण ॥ किं त्राति चे विश्रंति स्थान ॥
 किं ज्ञान मुंति मंत ॥ ४९ ॥ निद्रात स्फुरा चिसा हाकारि ॥ ध्याना अनुष्ण ना विधु
 करि ॥ चातुर्य विद्या कळा कुशरि ॥ निद्रे माजि बुडति पै ॥ ५० ॥ निद्रा मरणा चिसां
 गतिणि ॥ निद्रारात्रि चिडेष्टा भगिनि ॥ निद्रा जिवास विश्रंति करणि ॥ आयुष्य
 हार निने तसे ॥ ५१ ॥ सुख सुक्ष्म कारण पाशि हिं ॥ बुडो निजा ति मनुष्य डोहि ॥
 असे कुंभ कर्ण शिशु स्थि नाहि ॥ जाग कां हि न के चि ॥ ५२ ॥ कुंभ कर्ण निद्रा सा
 गरि ॥ बुडो निगेला अहारात्रि ॥ पिता देखो निचिंता करि ॥ स्वणे उपजो निज नमव्य
 र्थ याचा ॥ ५३ ॥ मग लेणे प्रार्थिला कमळासन ॥ मागिले हे वरदान ॥ षण्मास

(6)

॥५॥

जातिया येकदिन ॥ सर्वसुखभोगिलहा ॥ ५४ ॥ असोविभिषणाश्चिचतुर्वगत्र ॥ ह्यणेमा
गईछित्तवर ॥ लवतोसुशिकपवित्र ॥ कायबोलताजाहाला ॥ ५५ ॥ ह्यणेसत्समागम
शास्त्रश्रवण ॥ दयाक्षमाउपरतिभजन ॥ निद्रावादेदधगाकुन ॥ विष्णुचिंतनक
रिनमि ॥ ५६ ॥ अशातुष्णामनसाकल्पना ॥ भ्रांतिशुद्धिईछावासना ॥ ममताअवि
द्यासांणुनिजाण ॥ विष्णुचिंतनकरिनमि ॥ ५७ ॥ धन्यविभिषणाचिस्थिति ॥ केवळ ॥ ५८ ॥
वातिलिसुखमुर्ति ॥ किंभर्तिसपथारामकिर्ति ॥ विस्तारतिआधिपुढें ॥ ५९ ॥ सुर्या
आधिउगवैअरुण ॥ किंज्ञानाअधिजेसभजन ॥ किंभजनाअगेधरवैराग्यपुणे ॥
तैसाविभिषणजन्मला ॥ ६० ॥ किंतपाअगेधरसुशुचित्तपुर्ण ॥ किंबोधाअगे
धरसत्त्वगुण ॥ किंसत्वाअगेधरबहुतपुर्ण ॥ पुण्यजेसंप्रचटत ॥ ६१ ॥ किंसात्वा

रभाधिनिजध्यास ॥ मननाभाधिअवणिशेष ॥ किंअवणाभाधिसुरस ॥ आवडिपु
 टेंटसावे ॥ ६१ ॥ किंशमदमाभाधिविरक्ति ॥ किंआनंदाभाधिउपरति ॥ किंआत्मसु
 खशंति ॥ पुटेंआधिटसावे ॥ ६२ ॥ तैसाभाधिजन्मलाविमिषण ॥ जैसेफळअंग
 थरसुमन ॥ विधिसंतोषलाबैकोन ॥ त्रयेवैश्याचैधैन्येनि ॥ ६३ ॥ रामउपासकजे
 संत ॥ त्याचिलक्षणेहेचिनिश्चिन ॥ आमानितआदंभित ॥ अहिंसादिसर्वगुण
 तेथ ॥ ६४ ॥ अंतरनियहकरुन ॥ शंतिरसभरलेपुर्ण ॥ आत्मस्तुतिमनातुन ॥ स्वल्प
 जयाशिनावडे ॥ ६५ ॥ दुजियाचेगुणदापरति ॥ कधिनावडेजयाचेचिति ॥ परचे
 उत्तमगुणवर्णित ॥ नविसरतिकदाहिं ॥ ६६ ॥ गर्वनेणताअनुमात्र ॥ कोण्हाशिन
 बोलेनिहुर ॥ आपुलिनिंदाबैकलासाचार ॥ तिरस्कारलुपैजेचि ॥ ६७ ॥ जैसेमेघ

(7)

॥६५॥

जलप्राप्ति ॥ परिपृथिवरिगोडवर्षति ॥ धेनुतृणभक्षुनिदेति ॥ क्षिरजमलां
सरिखं ॥ ६४ ॥ युक्षदंडाशिधाळितिरवत ॥ परिगोडहायरसभरिल ॥ गंगापाप
जळे निपुण्यदेत ॥ तैसंतजाणावे ॥ ६५ ॥ पौरसेलाहोकाळिमाझाकोन ॥ ताका
कयिकारिसुवर्ण ॥ जैसेचिमाहाराडसंतजव ॥ पदेदधिंनलिंपिति ॥ ७० ॥ जैशि
कुळवंतकामिनि ॥ नवयवशांकिदृश्यसुणि ॥ तैसेआपुलंसुकुलशाकेनि ॥ स
ज्जनजनेरविति ॥ ७१ ॥ जैसेजेरुक्षययुक्त ॥ बिभीषणपरमभक्त ॥ त्याशिबिष्णु
नामसस्य ॥ वरेदेताजाहाला ॥ ७२ ॥ निरविहाणेसाचार ॥ तुजभेटेकरधुविरा ॥ ७३ ॥
तोचिचरंजिवकरिलनिर्धार ॥ शशिमित्रजसतिजो ॥ ७४ ॥ रावणकुंभकर्णले
वेळे ॥ मेळवोनिराक्षसदेळे ॥ प्रहसंमोहोदरधाविबले ॥ प्रधानआलेरावणाचे ॥ ७५ ॥

॥६५॥

(७५)

विद्युतजिह्वा जंबुमाकि ॥ वज्रीद्रष्टिविरपाक्षबकि ॥ स्वरदुषणत्रिशिरासककि ॥ वि
 द्युन्माकिमालिवंत ॥ ७५ ॥ मत्तमाहामत्तयुध्योन्मत्त ॥ शुकसारणघर्घरसमस्त ॥ बळ
 माहाबळधांवत्त ॥ रावणावेष्टितसर्वहि ॥ ७६ ॥ सकळभारघेउन ॥ लंकेवरिगेलारा
 वण ॥ कहांना ॥ टोपेवैश्रवण ॥ बहुदिनयुध्यकरितां ॥ ७७ ॥ मगरावणेकायकेलें ॥
 पितियायेपत्रआणिलें ॥ कुबेरापाशिफटविलें ॥ योरंवदिलेंमस्तकिं ॥ ७८ ॥ उक
 लेनिवाचिवैश्रवण ॥ आतलिहिलेंवर्तमान ॥ सुज्ञासापलबंधुरावण ॥ लंकाभुवण
 नयाशिदिजे ॥ ७९ ॥ पित्रुआज्ञातेवदवचन ॥ मानुनिनिघालावैश्रवण ॥ सकळसंपति
 पुष्पकिंघालुन ॥ विरंचिपाशिपोंगला ॥ ८० ॥ मगकनकादिचेपाटीरं ॥ निर्मुनिअलेका
 नंदनपुरि ॥ लेथेंकुबरतेबवसरि ॥ विष्णुसुतंस्थापिला ॥ ८१ ॥ मायासुरंमंडोदीरआणिशक्ति ॥

(8)

॥७॥

हेता जालारावणाप्रति॥ दिर्घजाकाबचिनाति॥ तेदिधलिकुंभकृष्ण॥ ८२॥ शैमैरे
नामैंगंधर्वकंन्या॥ तेदिधलिविभिषणा॥ सकळभुपशरणरावणा॥ येतिलेकेशिभये
वि॥ ८३॥ रावणेसर्वदेशजिंकिले॥ गडब्राह्मणाशिधरितिबळे॥ मुखिघालेनिसग
के॥ दाढेखालेरगडिति॥ ८४॥ आकीतलेपथिवेजन॥ कोटेलपावयानाहिस्थान॥
मगकुबेरैस्वर्गिहुन॥ सांगोनीपटविलेरावणा॥ ८५॥ कुबेरेशेवकबोललिवचन॥ तु
हिकुषिपुत्रवेदसंपन॥ टाकिलेवेदयिवडेकरुन॥ शास्त्रज्ञाननाहितुष्टाशि॥ ८६॥
आहिजाणतेयेकश्रुति॥ जैसाअभिमानवाहातापोयि॥ गेब्राह्मणदेखतंदिशि॥ ८७॥
मारिताकैसेअधर्म॥ ८८॥ समजोनियाशास्त्रार्थ॥ मगकर्मकस्त्रिणैअनुचिता॥
याशिईहिनापरत्रयथार्थ॥ भोगिनर्कबनेकतो॥ ८९॥ अवलक्षणिपुरयिदेखा॥

(४४)

दर्पणि न पाहे बापुल मुख ॥ तो वरिच अभिमान बाधिक ॥ स्वसपाचा वाहार तसे ॥ ८९ ॥ तै
 से दोष आचरति ॥ मग धर्म शास्त्रे विलेकित ॥ परीखन मानी तिचीति ॥ नवल तरि
 हे वाटे ॥ ९० ॥ जैसे बोलता कुबेर द्युता ॥ रावण को थावला अद्भुत ॥ व्याघ्र मुखिं मुखिं
 घाला ॥ ताडिली यां जे विंखव के ॥ ९१ ॥ पटेता डला उरंग ॥ कीं शूंडे पिकितां खबल के
 मतांग ॥ किं घटें शीं पितां सवेग ॥ पावक न साखवल के पै ॥ ९२ ॥ जैसे को थावला
 रावण ॥ सकळ दळभार शिथ्य करन ॥ रात्र मजि जाउन ॥ कुबेरा वरि घालेलें ॥ ९३ ॥ सं
 पदा बाणि पुष्पक ॥ वस्तु हरिल्या सकळिक ॥ मग तो कुबेर यक्षनायक ॥ गेला शरण
 शक्रांत ॥ ९४ ॥ मग तो कुबेर सेवेका ॥ शक्र को शग्रहिटे विला ॥ जे सो रावणासि पुत्र
 जाला ॥ मेघनाद प्रथमचि ॥ ९५ ॥ येक लक्ष पुत्र संतति ॥ सवालक्ष पौत्र गणति ॥

बैशिसहस्र युवति ॥ भोगितां रावणनधाये ॥ १६५ ॥ अटरा अक्षोहिणिवाजं त्रि ॥ ग
 र्जतातिअहोरात्रि ॥ पृथ्विचेभुपमाहादारी ॥ करजोडुनिउभेसदं ॥ १६६ ॥ अस्तो
 जातां दिनकर ॥ कर्पूरदिपअटरासहस्र ॥ पाजकेनिउभेसमोर ॥ निशाचरविह
 ति ॥ १६७ ॥ इंद्राचाभेणेपर्वत ॥ रावणाशिशरणयल ॥ शक्रवामुचेपक्षदेहित ॥ र
 सिंलारिततुआत्माशि ॥ १६८ ॥ लंकेशतयातेअभयदेत ॥ तुलिकाअवधेपर्वत ॥ स ॥ ८ ॥
 मस्तअभवकामानिलिमात ॥ जाळेउन्नतवारण ॥ १६९ ॥ रावणइंद्रावरिचालिला ॥
 मेघनादेंद्रतेवेक ॥ बैरावतिसगटपाडला ॥ निजबकेरणंगणि ॥ १७० ॥ बैसासह
 स्रवेकसहस्रनेत्र ॥ जितिमंडोदरचापुत्र ॥ मगइंद्रजितनामथोर ॥ ब्रिहद्रवबांधि
 ले ॥ १७१ ॥ पाशघालेनिपाकशासन ॥ इंद्रजितबाणिलाघसन ॥ मगविरंचिआलाथावोन ॥

होय प्रसन्न शक्र जिला ॥ ३ ॥ देउनियां बापे क्षितवर ॥ सो उविला पुरंदर ॥ मगरावणे दे
 व समग्र ॥ शेवे लार्गिट विले ॥ ४ ॥ शंकरे बाणावे नित्यहार ॥ छत्रधारि रोहिणि वर ॥ रसा
 धिपति निरंतर ॥ बाहे निरधां वतचि ॥ ५ ॥ गभस्ती होय दारपाळा ॥ कुबेर आणि तो अ
 निक ॥ इंद्रें सडा संमार्जन सकळ ॥ यह माजिकारो वें ॥ ६ ॥ वस्त्रें धुत वैश्वांनर ॥ पुरोहि
 त जो लाविष्णु कुमर ॥ पांडित्य करि अंजित कुमार ॥ नारद तुंबर गतिसदां ॥ ७ ॥ दाह
 वेळ शिव पुजिला ॥ रावण दशवक्त्र पावला ॥ विसहस्त लाधला ॥ शिव हि केला व
 स्यलेणे ॥ ८ ॥ कोण येके समई रावण ॥ पुष्पक निमानि बैसोन ॥ कैलास गिरि चढतां पूर्ण ॥
 सों नंदिरक्षण माहादारीं ॥ ९ ॥ ह्मणे नको जाउले कापति ॥ शिव उमा बाहे तयें काति ॥
 जैसें बैकलां मय जापति ॥ परमक्षोभ पावला ॥ १० ॥ नंदि सहज नेवे के ॥ तुझे मर्कय

चे निबोले ॥ मिनरोहं कदा काके ॥ जाइ न बकेचि करोनि ॥ ११ ॥ जैसे बोलतां दशकंदर ॥
 कोपलाते कानंद के श्वर ॥ शाय स्त्रीं शै बनिवार ॥ तोडिलें ते कृपारावणा ॥ १२ ॥ ह्मणे उन्न
 तमुदमति ॥ तुजनरवान्नरवधिति ॥ तुवां दशरद के लेनि उति ॥ अक्रावामासति प्रध
 टे ॥ १३ ॥ लोवान्नर सपै करुन ॥ करि ट तुइंग व मोचन ॥ जैसे को नि कोपलारावण ॥ ह्म
 णे उपडिन कैल सगिरि ॥ १४ ॥ उचलै निवां शिव पर्वत ॥ ठेके शिनेई नक्षणात ॥ ह्मणे
 नितळि घात लेहूस्त ॥ समुळ पर्वत उचलावय ॥ १५ ॥ ते जाणे निहि मन गजामाता ॥ १६ ॥
 निज पहिर गडिला पर्वत ॥ सहस्र वर ज पयंत ॥ आक्रंदत रावण पै ॥ १६ ॥ मग करि
 शिवान्ये स्तवन ॥ प्रसन्न जाला त्रिनयन ॥ दशवक्त्र दिधला सो पुन ॥ आला परतो
 निलंके शि ॥ १७ ॥ ये कंदारे वातिरि ध्यानस्त ॥ बैसता जाला मय जाकांत ॥ पुढें शि

108

वलिंगविराजित ॥ लोपाणिचटतमाद्यारं ॥ १८ ॥ सहस्राहुनेनिजागुजेकरुन ॥ कोंडिकेन
 मंदेचेजिवन ॥ ध्यानकरितोरावण ॥ आकंटपर्यंतबुडाला ॥ १९ ॥ परमक्रोधाबलादशमौ
 कि ॥ धावोनिबालातयाजवळि ॥ श्रेणकोणरेतुंयस्थळि ॥ रेवाजळकोंडितोशि ॥ २० ॥
 सहस्राहुनेकवचघालोन ॥ प्रिवेशिथरिकादशवदन ॥ किंमैगेंद्रधरिताहारिण ॥
 जालेंप्राणकासाविस ॥ २१ ॥ बहुकावकरीद्यातला ॥ मगपैलुस्तिऋषिधाविंन्नला ॥
 भिक्षामागेनितेवेका ॥ सोडविलाराक्षसा ॥ २२ ॥ बकिचियाजगरादेख ॥ दळेशिबाठा
 लंकाजायक ॥ जैसाव्याकाचियेबिकिसुशक ॥ चाराचेउं प्रवेशला ॥ २३ ॥ तोबकिचि
 यामाहादारि ॥ येकपुरुषउभादेंधारि ॥ जाम्बियालेजा माझारि ॥ झांकोकतिशशिभि
 त्र ॥ २४ ॥ तोमाहाराजत्रिविक्रम ॥ देखोनिबळिचेंनिजप्रेम ॥ दारपाळजा लापुसपोतम ॥

11

॥१०॥

प

॥१०॥

आजभजित जगद्गुरु ॥२५॥ मगतयाशिह्मणेरावण ॥ बकिशिअणिबोलाउब ॥ ना
हितरहेनगरउचलुन ॥ पालथेयालिनसांगरि ॥२६॥ मगह्मणेवैकुण्ठविलाशि ॥
तुबकिचाप्रतापनेणशि ॥ आंतांनियेईहप्रसयाशि ॥ जायवैगेशिअतोता ॥२७॥
मगआंतप्रवेशठालेकनाथ ॥ लोसनेशिवेसलाविरोचनसुत ॥ तयाशिह्मणेयुध्य
कंदनार्थ ॥ करिमजशिंसत्वरतुं ॥२८॥ जैसाबुष्कलुणाचापुतका ॥ धराबयाआलाब
उवाब्बका ॥ किंईअबकेमाजला ॥ खोचुधाप्रलशिक्तां ॥२९॥ व्याघ्राशिधरह्मणेब
स्त ॥ आकिकासुपर्णाधरुधावत ॥ जैरावतिचोमोडाबयादंत ॥ शरभजैसासरसाव
ला ॥३०॥ किंईअिकथांवेसत्वर ॥ लाडावयाखदिरांगार ॥ खद्योतह्मणेदिनकर ॥
असडोनिपाडिनखालता ॥३१॥ तैसाबकिप्रतिरावण ॥ सांगंआपुलेथोरपण ॥ किंस



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com